लाल पान की बेगम

पात्र :-

बिरजू की माँ -

बिरजू के बाबा -

बिरजू —— एक छोटा सा लड़का है जिसके चोंपिया -बहन नाम से उसके माता-पिता को मखनी फुआ - बुलाया जाता है।

जंगी की बहू। देहातों में पति का नाम नहीं लेती स्त्रियां, बेटे के नाम से बुलाती है

स्त्री मन की लालसा है, ग्रामीण परिवेश में शिक्षित एक स्त्री के मन की इच्छा का चित्रण इस कहानी में किया गया है। ग्रामीण परिवेश को लेकर इस कहानी की रचना की गयी है।

कथा का आरम्भ ही एक स्त्री पात्र से होता है जो बिरजू की मां की पड़ोसिन है वह आकर कहती है। बिरजू की मां नाच देखने नहीं जाओगी क्या? उनको बलराम पुर नाच देखने जाना है, बिरजू की मां अपने पति की प्रतीक्षा कर रही है क्योंकि उन्होंने कहा था कि वह बैल गाडी लेकर आयेंगे और नाच देखने गाडी में बैठकर जायेंगे, लेकिन अंधेरा हो जाता है, गांव की लगभग सभी स्त्रीयां नाच देखने चली गयी है, लेकिन बिरजू की मां अपने बच्चों संग पति की प्रतीक्षा बडी बैचेनी से कर रही है, वह नही समझ पा रही कि उसके पति को देर क्यों हो रही है, मन ही मन वह कुड रही है, और अपना गुस्सा अपने बच्चों तथा पडोसियों पर निकाल रही है। जिसके सभी स्त्रियां

पानी भरते-भरते उसकी आलोचना करती है कि बिरजू की माँ को पाँच-बीघा ज़मीन क्या मिल गयी, अब वह किसी को कुछ समझती ही नहीं है. बड़ा इतराती है, बैल लिए हैं, या उसके पास अब बहुत अनाज है, तो क्या हुआ। बिरजू की माँ यह सब सुन लेती है, बहुत गुस्से में है, उसने तय किया था कि जिस दिन नाच देखने जायेगी पति तथा बच्चों के संग, तो उस दिन मीठी रोटी बनायेगी, और आज उसने सारी तैयारी भी कर ली थी, चंपिया (जो उसकी बेटी है) से शकरकंद मंगवायी, शकरकंद उबाले, बिरजू के बार-बार शकरकंद खाने की ज़िद पर उसे खूब फटकारा, पर अब उसका मन उतर गया है, बिरजू के पिता को देर हो गयी है आने में, इसलिए उसने अब मीठी रोटी नहीं बनायी, और बच्चों को डांटकर अन्दर ले आयी और उन्हें सो जाने को कहा, खुद भी सोने के लिए लेट गयी, आज नाच में जाने के लिए उसने कितनी तैयारियां की थी, अपनी शादी की लाल रंग की साड़ी निकाल कर रखी थी, बहुत से पड़ोसियों को न्योता दिया था कि बिरजू के पिता जी गाड़ी लायेंगे, तो हमारे संग गाड़ी में नाच देखने चलना; अब बिरजू के पापा अभी नहीं आये, इसलिए खूब गुस्से में वह भी लेट गयी, पर मन बेचैन है, इसलिए सो

नहीं पा रही. तभी बाहर से बिरजू के पिता की आवाज़ आती है, पहले तो वह बात नहीं करती, चुप बैठ जाती है, बच्चों को भी चुप-चाप लेटने को कहती है, पर बच्चे की खांसी आ जाती है, और बिरजू के पिता को पता चलता है कि सब अंदर है, तो वे उन्हें आवाज़ देकर पूछते हैं कि सो गये थे क्या, बिरजू की माँ कहती है कि अब तो देर हो गयी, नहीं जाना है, रोटी भी नहीं बनी है. बिरजू के पापा उसकी तारीफ करके कहते हैं कि तुम्हारे लिए रोटी बनानी कौन सी बड़ी बात है. दो-चार रोटी तो तुम यों ही बना देती है। स्त्री दो मीठे बोल सुनकर प्रसन्न हो जाती है. जल्दी-जल्दी रोटी बनाती है, बच्चों को तैयार करती है, पड़ोसन मखनी फुआ को बुलाती है, उसके लिए तंबाकू साथ में रखती है, खुद भी लाल साड़ी बांधकर, मांग में सिंदूर तथा माथे पर चांदी का टीका सजाती है। और गाड़ी में बैठती है, और रास्ते में एक स्त्री जिसकी बहुत इच्छा होती है, बलरामपुर जाकर नाच देखने की, उसे भी गाड़ी में बिठाती है और खेतों को देखते हुए, बांपिया से गाना गाने को कहती है — बांपिया गाती है और बिरजू की माँ ने अपने आप की सुन्दरता का अनुभव

Scanned with CamScanner

किया, क्योंकि जो स्त्रियां आगे कुंए पर पूर्व उसकी निंदा कर रही थी, अब उसकी प्रशंसा कर रही हैं, क्योंकि उसने उन सबको गाड़ी में बिठाया और नाच देखने ले जा रही है, इसलिए वह बहुत प्रसन्न है, क्योंकि अब उसकी इच्छा पूर्ण हो रही है।